

अद्याय

८.



आश्वाचेष्टा ॥४॥



"Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan
Pradhikaran, Mumbai."

४

आश्वाचेष्टा

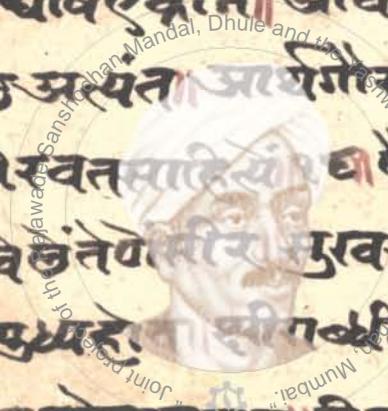
॥ श्रीराजीवासायनमः ॥ वहुरशोत्रेकरीतिप्रस्ता ॥ त्रीतियोध्यां हनुमंतज्
 -पक्षन ॥ सांगितलें हनुवांषुणा ॥ वृश्चाज्ञुतनवल्लभी ॥ आवरीकेषुगा
 णौ सावारा ॥ हनुमंतजन्म प्रकारा ॥ वेगवृत्ती जासेविवारा ॥ दथवृष्ट
 दृक्षीयत्वा ॥ आ तरोषुगाणां तरीं वीपरीत ॥ दशापजवपानाये नीमित्य ॥
 सावें प्रत्येतरयश्च ॥ सागेस नस्तव ठावया ॥ एमंश्रोतणवें वागजा
 वा परिसोनीयं वृविकुञ्जात् ॥ इव उरसाचा ॥ परि सासवत्र श्रोते हो ॥
 आनादिसिद्ध आवतारमाणा ॥ जगदीवां गुंकी व्या आवठी छा ॥ जैसात
 रंगपुर्विजन्ना व्या पुनियां जेविं जासाथ ॥ जैसी गहाटघटमाछिका ॥ तविं
 ह आवतारधर त्रीदेवा ॥ कीज्ञानं ग मित्रास्त गांवा ॥ प्रदक्षणां करणं मे
 रुची ॥ ६ ॥ कीज्ञपमान्नेवेमां ॥ ते चरीयेनिपरतोनि ॥ तैसे आवतार ब्रह्मां

२४
उभुवनिं॥ परितेमावेसारीरवे॥ अतरीक्षमपरत्वें आवतार॥ जेजेवेले
जेंकरीत्र॥ तैसंबोलेस्त्वचति कुमरा॥ क्रशासा-दार तितु क्याहि॥ न् येके
आवतारीं वस्तिलेयेक्ष॥ तोंडुसरे आवतसीं विशेष कौतुक॥ तरीत्तुकेंहि
स्त्वदेखव॥ विपरीतार्थं नस्तानीजे॥ एवं माजीये क्रांगविरा॥ तैसाजापी
जेइश्वर॥ परमश्रोतयंक्राप्रा॥ यति क्रहुरसादरजेक्रां॥ सप्तनाय
क्रप्रविणायस्यंत॥ क्ररीं सदेहध्युष्ट येत॥ प्रस्तांहरसोहित॥ आङ्कास
मयेठसुनिं॥ मगद्विनेंथै॥ दणांयेन॥ वटविलेंसुर्तिवारासन॥ वा
स्त्रिसंमतसा क्रोनिकावा॥ सोहि आभंग आजिवागरभ॥ सत्ववोहि क्रादोनि
सत्वर॥ शमांवेऽसोहिवार॥ परमकौवाल्यसावार॥ प्रस्त्रवाणाछेहितु॥
ए॥ ओतावक्तयावें संधान॥ तटस्तपाहतैविवक्षण॥ धन्यधन्यहुणोन



(3)

॥तर्जनिमस्तकगेतुवितु ॥ आवेशावदीलेहोघेजपा ॥ सप्रेमेंकरीती
 नामस्मरण ॥ तोसपनघोषएवोत् ॥ आवदसाक्षापदेउति दुरीपक्षति ॥
 ॥ पथे ॥ वक्तव्यवेकाणजाक्षयंत ॥ आशेशावेंमुखलहवलर्खीत ॥ पद्मार
 वनांपशमंडित ॥ मुरंगामिस्वत्पात्रियं ॥ धैर्येश्वारसुटतांआपार ॥ नेदलें
 श्रोतयाक्षेंग्रंतरा ॥ गेतुविचुंतेष्टीरु ॥ शुक्लमेनिभरेण ॥ वैरभादनस
 तांविंचीत ॥ हेंग्रांदाक्षेंग्रहे ॥ श्रीगवीवाचहरीशमिठत ॥ जैस्याये
 कमेकासी ॥ निष्कृपटशोलटुसत्त ॥ निरभिमानवस्तुवोत्त ॥ शाहूको
 शाल्यस्थस्त्य ॥ जापानेपं इतविवेकी ॥ देवप्रक्तांचाऊनुवाद ॥ तेऽयं
 द्वासणवैरसमंध ॥ कीर्णुरवीष्यावावोध ॥ आनन्दयुधशाहूवेण ॥ आ
 सोग्रातांबुद्धुत्तुक्ती ॥ वातुर्यमिथनयहति ॥ वर्मज्ञाणरिजेयंसिति ॥ साहीत्य ॥



रीतिक्रान्ता ज्या ॥ अ ॥ वक्त्री वीघु मोहि बदुंत ॥ युक्ती सागरी वीरलें काटीत
॥ ये कर्म धुम प्रकार बहुंता ॥ निपज्जावि तसुगरणी ॥ अ ॥ ये द्वे रति वै वै घट
जपारा ॥ ये क्रातं तु चै पटवि वीक्रा ॥ ये कहे मवदुं जालं कारा ॥ हाट क्रघउना
रकरी ज्ञेसा ॥ अ ॥ ये द्वे क्राणी सीली कारा ॥ युक्ती दारवदि आपारा ॥ तैसतो क
विवलुगा ॥ वाह साहित्य विवरी ॥ असोहृष्टा लुर्य कोठणे ॥ सांगितले
ओस्याकारणे ॥ युटं रथु नाथ कधायरी मणे ॥ श्रीधर-वलुरा विनावि ॥ अ ॥ मा
गंर साठव शत्यनुसंधान ॥ रीतिय घासु निरोपण ॥ सांगितले हनुमंत
जन्मकशन मुख ग्रंथाधारे ॥ वदा सिंहावलोकणे तत्त्वता ॥ श्रोतिं परीमी
जेमागील वृश्चा ॥ तीरीरायीयं जाल्य गर्भस्तु ॥ त्रौधा ल्य सुमित्राकौड़ै
॥ अ ॥ जैसासु इवि जे वास्त्र गांका ॥ वीय क्षेपन्वटे जाव्रे ॥ प्रकाशापडे जा



(h)

धीकाधीका। उदयाद्वीहो निपञ्चमो॥२॥ कीरतिं संतसमागम॥ दिवसें हि
 वसवाटप्रेम॥ किं औदार्यकरनिपरम॥ कीर्तिवाटेसत्वर॥५॥ तैसे गलियां
 वेगभवाटति॥ तों विशिष्ट बोल गायदशाया प्रति॥ मायाधर्म वाप्ली ऐसीरि
 ति॥ जो हके श्रीयोतें उसावें॥३॥ ऐसं वाल ब्रह्म कृष्ण॥ हर्ष वाटलायासी
 नमोनिवाशि॒ष्ट वरणांसि॥ राजे जनका गालिला॥४॥ वाची कीयामंहिं
 त॥ जैसाव्रत बालु प्रवेशत॥ एह की अज्ञायाठ मुत॥ वै वै इसदन प्रवेश
 उ॥५॥ दीर प्रावाना कीयेकाळे॥ वै वै इहो तिरसली॥ अपौ निमाजें द्र
 तेवेकी॥ तिच्चेसदनिं प्रवेशला॥६॥ दुतजाया वितिस्वामीणीतें॥ जो हके
 उसावयातु महातें॥ नृपतिस्वयें येतयेशें॥ मुमुक्षुपादुनियां॥७॥ सुंदरप
 णां चाजामीमान॥ सावरी वै वै इही गभीन॥ जैसे अछाविचागर्घुण॥

>

५८
तैसें वीर्ये जप्तुलें ॥ पाजै सीगारो उया वीद्या की वीत ॥ परिद्विंशांधि
ली बहुंता ॥ कीनि न द्विक्र वाहत् ॥ अपजा भरमान विद्वेष ॥ वा विंशु मात्र
विषवृश्चीका ॥ परियुज्ञ ग्रवरता च देवा ॥ कीकी वीत ज्ञान होतां मुखा
॥ मगतो न माति वह स्पति तें ॥ आ वरने सीडु ग्यकि वीत ॥ परो उत्ता प्रह
रदेत बहुंता ॥ अल्पो द व्रें द्वं बहता ॥ अंगभी जत वाह क्राचें ॥ वा तै सें
वै वै इ सजलें तेवेचि ॥ प्रीनि नें द शरण अल्लाज वक्ती ॥ आ पण सजे वरी
बै सलि ॥ नाहिं उठिली साधा द यतां ॥ काहिं च मर्यादा तेषें ॥ नधरो हेख
तां न्यपनाय ॥ मगउ न सहो नीद शरण ॥ डोह वेषु सतति जलागि ॥ अ
थो वै वै इ बोलें व वन ॥ लुजजें प्राव ऐ लमन तुन ॥ तेस मरु उरविन ॥ स
स्तु जाण प्राण प्रीये ॥ अ ॥ मग काये बोछे तेवेचे ॥ तुम्ही काये उरवाल माझे



(५)

ओहक्के॥ मासेमनीवेसोहक्के॥ पुर्वकृत्तिसेनां॥ अश्वमगबोलेजाजनंहन
 ॥ तुजक्कारकोंसिंचेवीनप्राण॥ परीओहक्केतुश्वेषुरविन॥ सत्यवन्यनसुकु
 माये॥ क्षमगद्युणोजीन्तपवन॥ उहक्केसाक्षहृवीज्ञावधारा॥ कौशलाध्यासु
 मीज्ञेवीयाषुक्का॥ दिग्ंतराहवाग्वंज्ञपाठवावेदुरीक्कानना स्थांवा
 समाचारउन्हांक्केनां॥ अमुदासमाक्षरस्पांवेक्कां॥ सहस्राहिनज्ञ
 वा॥ एष॥ गरुद्यावेमाक्षीयापुरा हृषीक्केहोतिगजेंद्रा॥ तुम्हीन्ह
 पालहायाधर्मविन॥ तोदोषमस्त्रवरीघालीजे॥ न्यजजनिंदीतिल
 सक्कलेवा॥ तोंतोंवाटेत्रमजल्लासुख॥ समस्तजनांकावेंदुःख॥ हेम
 जछायावेऽन्तु॥ ऐसंक्षेत्रैवदेतेअवसरी॥ ऐक्कतांन्तपववोंवडायं
 तरींक्षीक्कुल्लज्जीघातलिशुरी॥ क्षीज्ञावरीवपक्कापचे॥ बद्ववन



४

३४
क्षेत्रं क्षेत्रवदा॥ हुः खवल्लिक्षेत्रे प्रक्षेत्र॥ कीसं वर्तें हन्ताहल॥ हृदयं वाटेदश
रथपाठ्य॥ धारे पर्वतको सरला॥ काच सर्वजीहारीं म्लों दला॥ कीतं स
वस्त्रवायें परिछाः॥ आंगावरी जाक स्मात्॥ ४०॥ कैव्रै इवलबो द्वयवच
न॥ प्राचीर्तें आयुष्यसागरीं जीवन॥ नावो धावगा जे विंचलुरानन
वेदहारणकेलें जेक्षण॥ परमरवेद पावलान्तपवर॥ तिसनें दिप्रस्थो
नर॥ मगसुमित्रेवें मंदिर॥ प्रवत्रता नाहला॥ आसंसारतायें संतत
तेसंतसमागमें निवत॥ तैसा कीरा नाहलारथ॥ सुमित्रासद निं सुखाव
ला॥ ५०॥ तिवें नाम सुमित्रासति॥ परीनामां सारी वीक्षा सेरी ति॥ वरक
उनामें जेए काति॥ तें तों जागां व्यर्घन्वी॥ ५१॥ नाम रेविलें उद्धारकर्णा॥ जा
उक्कावे वीतां जायेप्राण॥ वह स्पृहिनाम ज्यात्रमुणा॥ त्याधउवनको



(6)

लतांनये॥६॥ याकेमक्नयन्तां नामविश्रेष्ठ॥ परीदोहि जोकांवाटलेवउस
 हरिसंधुनामयुत्रस॥ तरीतक्त्वहीसमिक्नेन्न॥७॥ नामठेविलेपंव्या
 नन॥ परीजंबुकदेवतांपठेउठोन॥ जन्मगेलामागतां व्रोगान्ता॥ सार्व
 जोमनामजयास्याति॥८॥ नामदेविलेजयमदन॥ तोविरवीआणीकु
 लस्पण॥ तैसिसुमित्रानकेजाण॥ करविनासांसारिखी॥९॥ नपजाला
 ऐवतांवर्णीसिमोराआलीं सग मिमि॥ दशरथाचीये-वर्णी॥ न
 स्तवदेविसद्वावें॥१०॥ स्त्रीषांसिदेष्टौआपुलानाथ॥ युत्रासहेवतमा
 नावीतासत्य॥ इतीष्यासिगुरहेवतयथार्थ॥ प्रहस्तासिप्रतिथीहेवहो
 ये॥११॥ श्यामोनिसुमित्रेनंजाजनन्दन॥ युज्ञीलाव्रोउघोप-व्यारंकरुन॥
 उभीगवलिकरजाउन॥ अधोवदनसहुज॥१२॥ सगसन्मानुनिरायासि

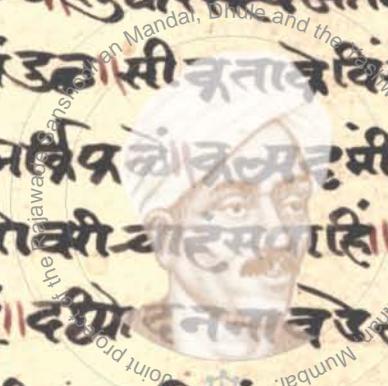
(८)

॥ बहुंतवीनितहोउनिवेसि ॥ लद्दइ आळंगि देगेंसि ॥ तयासीबहुंजा
 दरें ॥ वैकैश्चोह क्षेयाचेदुःखप्रबक्ष ॥ रावति ससरलतेहों सबक
 ॥ जेमाकोधठसावतां निर्मल ॥ तमजाळ वितक्षेयैं ॥ ६४ ॥ आजाहोमुसि
 त्रेसि ॥ कायेऽहक्षेहोतातिमानसिंतें मज्जसंगें निश्चयें सि ॥ कुरंगनेत्रेसु
 मित्रे ॥ धर्णमगस्सीत हांस्यवरना ॥ वारसस्तु जघधोवदन ॥ जेलैव्रतांसु
 खसंपन्ना ॥ आजनंदनहोयैं ॥ अभ्यासाप्राविहीबहुंवस ॥ कौवाजा
 गत्रेजगल्लिवासा ॥ अवतरेनजा भादिपुरव ॥ जगहंद्यजगहात्मा ॥ ६५ ॥
 ॥ साक्षीआहोगत्रेवावरवि ॥ वारेममपुत्रेवीवरावि ॥ जातीवरातीव
 आद्यवि ॥ वेवल्लावितयावरसनि ॥ ६६ ॥ दोवेपरतें योरसाधन ॥ ममपुत्रातेंन
 प्रानेजाना ॥ प्रापुल्या आंगाचेंजास्तरण ॥ जेलैवेलातीवरो ॥ धर्णत्रीभु



Vyasadeva
Joint Project of the
Sant Tukajawade Sanskriti Mandai, Dhule and the
Yogdiantra Chavala
Trust
Mumbai, India

वन्नराज्यत्रुणां समाना ॥ पहुन्त आधीक्रिजे एभजना ॥ व्याप्ती कुक्कुट वाटते गो
 न्या ॥ जेष्ठ से वनां पुढें पौं व्यथा ॥ सुधार मुद्य जो नीर्मला ॥ क्रोधां आवेल ह
 काहळ ॥ उत्तम संउनिं तं डुळा ॥ सीक्रताक्षावंसीज वावि ॥ ७० ॥ पञ्जनि सुंदर
 गये त्रेवें ॥ क्रोध भस्तील अल्पि प्रक्रें ॥ कल्पनृं श्रीजो विहं गम खेळे ॥ तोनात ले
 बभुडे स्ति ॥ ७१ ॥ मान स सरोकरी चोह सा इहि ॥ तो वरान रा हे उत्तुक्रम हि ॥ तु
 रिदीधली शिराव्यी डोहि ॥ दहिये दनना चे या ॥ ७२ ॥ नंदन वनि वा भ्रमर क्र
 दा द्वाविं ॥ आविं पुष्पीं रुंजी न घालि ॥ इं इभुवनीं निद्रा द्वेलि ॥ वंसो गांगारीं न
 निजे तो ॥ क्रों भातु इज्जाय वांगली ॥ सां जो निप्रेत क्रोध व्रव की ॥ तैसी म
 नि आवहि धरी लि ॥ क्रहां विष्णु न रमेतो ॥ ७३ ॥ मूणो निराजा च क्रतु रामां नी
 ॥ माश्री आवहि जेष्ठ मजनि ॥ ऐसे सुमित्रे चे ग्राह व्रर यंति ॥ आकृपी लेह ज



३४
रथे॥७॥ पवाटे जास्त प्रावान देले॥ कौतीभुवन रात्यहा तासि प्राले॥ ते संन्द
पद्में मनसं तोष ले॥ आकंगि लें सुमित्रेसी॥ १८॥ ऐ द्रेंस कुमार राजसे॥ दंपत्
कलीके परमणोळसे॥ तुवां जो हक्को जे हुले मानसे॥ ते मिं उरविन निधि रि
॥ १९॥ नानां भुषणों ग्राहं द्वारा॥ वो वालो तिजवरो निन्दयवर॥ हाने दे व वी
लं जापार॥ सुमित्रावे हालिं पावक॥ २०॥ यहु परजे प्रालं॥ कौवाल्याना
में जान्नरवांरी॥ जेषु रापापुरषा॥ वीजा॥ निं॥ कौभुवनि जीवे निरव्याति दे॥
२१॥ ते परब्रह्म र सम्बोधु संदि॥ निज॥ व्रावारत्न प्रां दुस॥ शीरा वीह दे
विलास॥ जीयों जं तरीसंट विला॥ २२॥ जाइं दिगावर त्रीभुवनेधवर॥ उषावे जा
ज्ञां धारव विधिजावीवर॥ हसइं ध्याये जापांविर॥ कौवाल्याउहरनिवासी
जो॥ २३॥ आसो कौवाल्यो वे मंहीरी॥ प्रवेशात जालाश्रावणारी॥ दो वक्त्राहि



(४)

लेवादेही॥द्वारमर्पिष्ठधरोनियां॥भृत्यैशाल्याज्ञनकंठापरम॥तिसञ्जंतर्की
 शुभ्यापीलाराम॥वरावरज्ञावचेंपरब्रह्म॥नरिसेवित्रामकदाहि॥कै॥सांउ
 नियांज्ञाग्टतीशुशुतीस्वप्र॥नयनिंल्यालीज्ञनंजन॥वरावरज्ञावचेनि
 रंजन॥रुपरिसेवित्राल्या॥हवारणप्रवेशोनियंतरींपाहेस्तुत्वो
 सरेवरि॥मगमसस्मदेहेमाजघर॥नरि पेक्षासेवित्राल्या॥त्वंवारपादोठ
 रिंपाहेसादर॥तवंतेष्वंवीज्ञात्याज्ञाःकर॥मगमाहंवारणउपरीशो
 गस्यावरीन्द्रवदीयेता॥न्धात्येहिन्दिसेवित्राल्यासति॥वकीनयाहेस्तुत्व
 पति॥जीवेउदींसंटवेजग्न्त्रति॥तिक्तीस्तित्रिक्ळेनंठ॥मगवरापरपर
 सांत॥प्रवेशातहोयआजपात्रसुत॥तोंबैसलिसेसमाधीत्ता॥निर्वित्रिल्पदत्ता
 तक्ती॥ताजांतरहष्टीमुरउलि॥ब्रह्मानंदरूपजाली॥वरदवस्वनामवि

७

४८

सरली॥ नवलेबोलि है तप्ती॥ ८॥ जैसासते जपर प्रसिद्धा॥ तेथें जगन्तरागे
 आनुपात्र॥ स्वरं पीपुडु उतांयोगेश्वर॥ जानराहीले दैलीकृते ९०॥ ब्रह्मांत
 विजुप्रसाकरी ठी॥ पींपीठीकामेरक्षेसीघालि॥ एनुवष्टम्भं द्रस्तु आक
 री॥ ये वाहेवेक्षेरे रहें॥ १०॥ परी दत्तुरास्वरपावरी॥ नवलेवैंनिर्धा
 री॥ श्रोतयाव्ययज्ञाके नीती कामदाहसीप्रवेशोल॥ ११॥ वउवान्नक्षणे
 वर्षुरजाणा॥ किंजलनिधीसात्तीतवल॥ तेसिखुद्धि आंगीमन॥ स्वसुवावरी
 विराले॥ १२॥ आसोस्वानंदसापागंत व ग्राध्मा पुर्णमिनाधीस्त॥ जवठीउभावा
 कलादग्नारथ॥ पाहेतटस्तुगाढ़ी॥ १३॥ कौशल्यास्वरं पीलि न॥ हेदग्नारथ
 मिनेलावेखुण॥ मुणेहेसलीषुर्वी॥ तरीववनवोलावें॥ १४॥ मुणौनि
 वत्र कुजामणि॥ कौशल्यजवठीबैसोनि॥ म्ने हें तिसी आविंगुली॥ समा



(१९)

धानकूरीतसे॥४॥ धत्वंतेनुघटिकीनयन॥ नाहेंस्विशरीराचंभान॥ मीस्त्री
 उरुषदंस्मरण॥ गोलिविसरोनकौशाल्या॥ अजळंकारकैंचेष्टनुवर्णोत
 रंगलटीक्रेयेकजीवण॥ तैमातिश्वनाहेंयकास्तुनंहन॥ अनंदघनसंवला
 ५॥ ऐसिकौशल्येकीस्त्रिलिङ्जाली॥ राजाप्रणालेउपीठीकीमहद्दुतंधे
 तली॥ वोकरवप्पोउलीइयवी॥ राजास्त्रादवक्त्वपिसि हृ॥ हिंसीधला
 आसिर्वाहा॥ कीपोरायेइलक्रसंनह॥ रातिपुरषक्षीराम॥ ६॥ ऐक्षतंगान
 नामस्मरण॥ कौशल्येनेंउघटिलेनयन॥ तोसज्जाससंपुण॥ रघुनंदनर
 पदिसे॥ ७॥ राजास्तुणनितिंविनी॥ कुरुंगनत्रेगज्जगमीनी॥ कायेजेआवति
 आसेउमनिं॥ उहुक्षेपुरविनसर्वते॥ ८॥ भ्रमणकोनबोलवचन॥ तोंकौशा
 ल्याकोलगज्जन॥ मीरिजगदात्मांरघुनंहन॥ कैंचेंआज्ञानमत्तपासी॥ ९॥

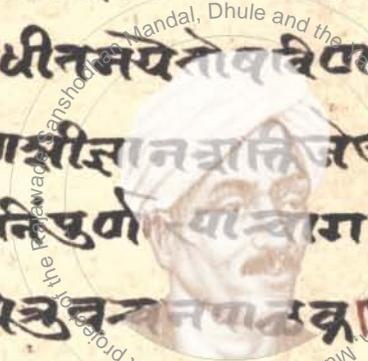
१४

सुखलिंग अपीक्षारण ॥ त्याहुनिमाशेस्वरपभीन्न ॥ माहांकरणहिनिर
 सुन ॥ आस्मरामवेगद्वामी ॥ नैदैतआदैतमाहादैत ॥ त्याहुनजागत्रामी
 आतित ॥ सद्विदानंदवाहुजेयं ॥ खुरोनियांगाहिला ॥ जीवदिवदोन्हीपस
 धाताध्यानध्यपलस्त ॥ यावेगद्वामीमन्मास्त ॥ आविंशुआठसश्रीराम ॥
 राजाह्यपोक्त्राल्पेरैकं ॥ मीवोपाजादं प्रत्योक्त्रवें ॥ ओहलेउसावणाम
 हत्कर्वें ॥ तुजजवळीक्षेसलें ॥ यरीह्यपोजाताज्ञये ज्ञान ॥ हंसर्वगेत्तें
 आटोन ॥ नाहिंलीपुरुष न पुत्र कृष्ण ॥ मीलुंपणकैंवेंतेयें ॥ न्तपत्त्वाणे
 महदूतंदेतली ॥ वोक्तरिसर्वहीलोरिली ॥ मगासुसेगेवमागीली ॥ धाकुट
 पणांकीतियेनें ॥ नुजास्यपोक्त्रांकवदने ॥ मुणसरीतेपद्मनयेनें ॥ कहा
 उखुडउनितुज्जरावणो ॥ नेलैंहोतेतं जाठवतेंविं ॥ ॥ चात्रुनेनामरैकतां



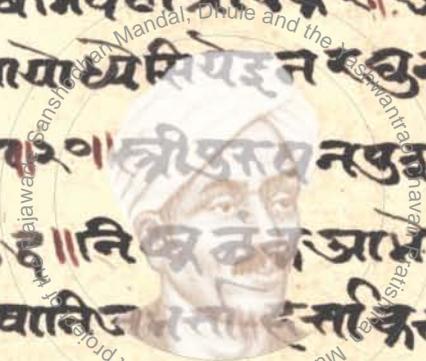
(१०)

वर्णी॥ हाव्रपोतिलीनुजपीतोनि॥ स्मृणोधनुष्यवाणदे आणुनिं॥ राज्ञीमके
 तुनिहारेसीरें॥ गतारीक्रामारुनियांजाधी॥ त्रैषिणगया वविलासिदि॥ मा
 हांगस्सवधुनियुधी॥ गंधीनेयेतोवविटा॥ अ॥ चीवन्नापपरमप्रवंउ
 ॥ मोउनिव्रीन तुवंउ॥ माक्षीज्ञानवालियाधवंउ॥ पठाजीक्रोनितो॥ १३॥
 जेणोंनिसे त्रीक्रोलिआवनिचुणो॥ पान्नागर्वहीननलगतांस्था॥ मीयेक्र
 पालिंवत्तिरचुनंदन॥ एत्रुवन्नपान्नक्र॥ नामीओविनघोरविकीन॥ प
 रिवारेसीत्रीशिराखरउषण॥ स्मृणोमात्रेणदाविनवधुन॥ आमिंत्रुणजालि
 जेसें॥ १४॥ दीमवान्नराहातिं॥ लंद्राघालुवीनपालशी॥ माशावज्जदेहिमा
 त्ति॥ परमपुरुषार्थिमाहांविरा॥ १५॥ स्मृणोजाठोनिलंद्रानगगा॥ त्रुच्छीसी
 इंद्रेदिनजायारा॥ पान्नापीपालानुनिंसमुज्ज़॥ लंद्रायुरघेइनमी॥ १६॥ क्रो



१०८

शाल्याहावदोहिदासपा॥ लंबेपुर्देमाजविणारण॥ माहांटीसाक्कुंभक्कु
 ॥ शक्तिनदेउनश्चणार्थं॥ २॥ सहपरीवारेंवधीनदचासीरा॥ बंदिवरोड
 विनसक्कवसुरा॥ माझाविभिषणप्रीयवरा॥ उत्रधरविनत्तणावरी॥ ३॥ स्व
 पदीस्त्वाशुनिभक्ता॥ मीजापाठ्यमिष्येनरघुनाश॥ आधीप्राधिजगरस
 ॥ याविनहीतक्करीनप्रजाप् ॥ श्रीकृष्णनष्टवाक्कमेह॥ यावेगाळार्चिक्रम्हुनं
 ह॥ मायावक्त्रवक्त्रसुह॥ नि क्षुक्षुक्षुजाप्तहैै॥ अ॥ मीप्रब्दयेक्रार्चीया
 व्रातता॥ मीजादिसायेयाति॒ नस्ति॑ सर्वतीर्त्याक्षिता॥ मजपरतानसे
 त्री॥ अ॥ मीजाज्ञज्ञातीतसर्ववरा॥ मीवनरलोंवरावराधरोनिना
 नंजावताश॥ नामांमाजीमिंसामावं॥ ४॥ एसेएवतांद्वारण॥ स्वप्नेनुते
 वेतलिंयशाश्च॥ यांदाफुटलावहुंत॥ वउवर्षेतभलतेंवी॥ ५॥ यंश्यासु





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com